संस्थापक – सम्पादक : स्व. श्री महेन्द्रकुमार

कार्यकारी सम्पादक : चिन्मय मिश्र

सप्रेस आलेख : 108 : 2015–16

दिनांक 04–12–2015

प्रकाशनार्थ

फोन एवं फैक्स : (0731) 2401083

सर्वोदय प्रेस सर्विस
बुलेटिन

साप्ताहिक सर्वोदय समाचार विचार सेवा

29, संवाद नगर, नवलखा, इंदौर – 452001 (म.प्र.)

E.Mail - indoresps@gmail.com

(इस आलेख का उपयोग तुरंत किया जा सकता है।)

अकाल से वीरान होता बुंदेलखंड

भारत डोगरा

भारत के सबसे मध्य में स्थित बुंदेलखंड एक बार पुनः मौसम की मार से तबाह हो रहा है। पिछले 15 वर्षों में से तकरीबन 11 वर्ष सूखे, असामयिक वर्षा, ओलावृष्टि या पाला गिरने से ग्रसित रहे हैं। बुंदेलखंड पलायन के अंतहीन भंवर में फंस गया है। शासन व प्रशासन की उदासीनता स्थानीय नागरिकों के जीवन को और अधिक संकट में डाल रही है। – का. सं.

उत्तर प्रदेश के बुंदेलखंड अंचल के बांदा जिले के नरैनी ब्लाक के गुढ़ेपल्हा गांव में कमलेश के परिवार के लिए दो वक्त की रोटी की व्यवस्था करना निरंतर कठिन होता जा रहा था। अनेक गांववासी पहले ही मजदूरी के लिए पलायन कर चुके थे। वह भी मजबूरी में यही राह अपनाना चाह रहा था पर उसका 2 वर्ष का बच्चा बीमार था, इस कारण झिझक रहा था। अंत में उसने फैसला किया (या लेना पड़ा) कि चाहे बच्चा बीमार हो, पर परिवार का पेट भरने के लिए मजदूरी की तलाश में तो जाना ही पड़ेगा।

कमलेश अपनी पत्नी और बच्चे के साथ बस में बैठ गया। कुछ दूर जाने पर बच्चे की तबियत बिगड़ने लगी। लाचार माता–पिता देखते रह गए और बच्चे ने दम तोड़ दिया। जिस हालत में माता–पिता बच्चे को वापस लेकर गांव आए और दाह संस्कार किया उसे बयान करने के लिए हमारे पास शब्द नहीं हैं।

इसी ब्लाक के कटहेलपुरवा गांव में तुलसीदास नामक वृद्ध को गांव में छोड़कर उसका बेटा रोजी–रोटी की तलाश में पंजाब चला गया। तुलसीदास की तबियत अचानक बिगड़ने लगी एवं घर में इलाज के लिए पैसा भी नहीं था। उसकी पत्नी घबरा कर कुछ पैसे लेने मायके गई लेकिन उसी रात तुलसीदास की मृत्यु हो गई। अकेले होने के कारण किसी को उसकी मृत्यु हो जाने के बारे में तुरंत पता भी नहीं चला। देर से पता चलने पर उसके बेटे को तुरंत फोन से खबर की गई पर इतनी दूर से आने में देर लगी। उसके लौटने से पहले ही गांववासियों ने किसी तरह आपस में चंदा कर दाहसंस्कार किया।

मजदूरी के लिए दिल्ली, पंजाब, हरियाणा आदि विभिन्न स्थानों पर रोजगार के लिए बुंदेलखंड से जाने वाले किसानों व खेत–मजदूरों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। उसके साथ ही गरीबी व तंगहाली की स्थिति में हो रहे इस पलायन से अनेक त्रासद घटनाएं जुड़ती जा रही हैं। जगह–जगह मजदूर अनिश्चित स्थिति में –ईंट भट्टों में, निर्माण स्थलों पर, खेत–खलिहानों में रोजगार के लिए भटक रहे हैं। उनकी मजबूरी का लाभ उठाकर प्रायः उन्हें कम मजदूरी दी जाती है। कई बार छोटे बच्चे भी अपने माता–पिता के साथ मजदूरी के लिए पलायन कर जाते हैं क्योंकि गांव से उनका ध्यान रखने वाला कोई नहीं है। गांव में बचे परिवारों के वृद्ध सदस्य भूख–प्यास, गर्मी व सर्दी की मार को झेलते हुए बेहद दर्दनाक जीवन जीने को मजबूर हैं।

बुंदेलखंड के कई गांवों में हाल की स्थिति पता करने पर गांववासियों ने बताया कि पिछली रबी की पकी–पकाई फसल असामयिक अतिवृष्टि व ओलावृष्टि से बुरी तरह उजड़ गई। खरीफ की फसल सूखे से बुरी तरह प्रभावित हुई थी। अब रबी की फसल की जल संकट के कारण बुवाई बहुत ही कम हुई है।